ई–बुलेटिन

कृषिउद्यमी

MANAGE

प्रतीयमान अनुभव को बांटने वाला मंच

खंड VI अंक XI

फरवरी-2015

प्रत्येक कृषक द्वारा बेहतर कृषि

इस अंक में:

- रावस्वाप्रसं, हैदराबाद में कम लागत की तकनीकों पर प्रदर्शनी
- इस माह के कृषि उद्यमी : श्री. ऋषिकेश जोशी, महाराष्ट्र
- इस माह का संस्थान : आईएसपीएल, अहमदाबाद एनडीआरआई
- कर्नल में XII वां कृषि

कृषिउद्यमी की मुफ्त हेल्पलाइन का उपयोग करें

1800 –425-1556

" कृषि उद्यमिता एक ऐसा प्रतीयमान मंच है जहां कृषि उद्यमियों, बैंकरों, कृषि व्यवसाय कंपनियों, नोडल प्रशिक्षण संस्थानों, विस्तार कार्यकर्ताओं, शिक्षाशास्त्रियों, अनुसंधानकर्ताओं तथा कृषि व्यवसाय चिंतकों, जो देश में कृषि उद्यमिता विकास के लिए कार्य कर रहे हैं, के अनुभवों को सबके साथ बांटा जाता है।

रावस्वाप्रसं, हैदराबाद में 'कम लागत की कृषि तकनीकों का सार्वजनिकीकरण एवं व्यवसायीकरण' पर राष्ट्रिय कार्यशाला-सह-प्रदर्शनी

कम लागत की हीड्रोपोनिक्स तकनीक का निरक्षण करते हुये डीजी-रावस्वाप्रसं।

तकनीकों का विवरण देते हुये कृषि उद्यमी।

कई विकासशील देशों में समग्र विकास और गरीबी के उन्मूलन के लिए प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के साथ कृषि उत्पादन को बढ़ाना ही समय की मांग है। इसके साथ, वैज्ञानिक, विस्तारण पदाधिकारी, प्रगतिशील किसान सहित कृषि के विभिन्न स्टेकहोल्डर्स स्थायी कृषि तकनीकों को विकसित करने में प्रवृत्त है। हालांकि, प्रवर्तक-व्यवसायी-कृषक के मध्य की खाई बहुत वृहत है जिसके कारण खेत के स्तर पर स्थायी तकनीकों के उपयोग का अभाव है। इस खाई को भरने की आवश्यकता के मद्देनजर तथा कम लागत की तकनीकों को लोकप्रिय बनाने और कृषि-पारिस्थितिक प्रणाली पर बोझ को उल्लेखनीय ढंग से कम करने के लिए राष्ट्रिय वनस्पति स्वास्थ्य प्रबंधन संस्थान (रा व स्वा प्र सं) हैदराबाद, ने 4 से 6 जनवरी, 2015 को कम लागत की तकनीकों पर प्रदर्शनी आयोजित की। ग्यारह प्रवर्तक जो ऐग्री-क्लीनिक और ऐग्री-बिज़नस केंद्र योजना के अंतर्गत प्रशिक्षित किए गए थे और जो मैनेज के तंत्र के साथ जुड़े हुये है, उन्हें पहचाना गया और पाँच राज्यों से आमंत्रित किया गया। कुल 2000 कृषकों ने स्टॉल का दौरा किया और विभिन्न कम लागत की तकनीकों के विषय में ज्ञान अर्जित किया।

कृषि उद्यमी का नाम	ऐग्रीवैंचर
श्री. अविनाश सालुंखे	: पेस्टोमेटिक नियंत्रण
श्री. के रंगा रेड्डी	: हीड्रोपोनिक्स तकनीकें
श्रीमती. एम. सरिता रेड्डी	: पौधों की वृद्धि नियामक
श्री. आर. सुरेश कुमार	: प्रोटीन सूत्रिकरण
श्री. के. पुंडरिकाक्षुडु	: उर्वरक वितरक
श्री. संजीव सिंह	: पनीर मट्ठा पेय
श्री. एस. संकना गौड़	: सौर स्प्रेयर
श्री. एस. वी. राजू	: कृषि मशीनरी
श्री. अरुण वांद्रे	: बांस की खेती
श्री. बी कृशनै	: केंचुआ खाद उत्पादन
डॉ. एम. एडवर्ड राजा	: पर्णीय पोशाक तत्व निरूपण

MANAGE राष्ट्रीय कृषि प्रबंधन विस्तार संस्थान,

कृषि सहयोग और कृषि किसान कल्याण मंत्रालय

NABARD राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक

खाने के लिए तैयार सब्जियाँ

'अरुषा ऐग्रो फूड्स' राहुरी, अहमदनगर जिले के महात्मा फुले कृषि विद्यापीठ के परिसर में स्थापित एक छोटा सब्जी प्रसंस्करण एकक है। इस फ़र्म के मालिक श्री. ऋषिकेश जोशी (45), कृषि विज्ञान के स्नातक का कहना है कि, "मेरे पिताजी मधुमेह के रोगी है। एक बार वें बाज़ार में करेला ढूंढ रहे थे। हालाँकि, वह उसका मौसम नहीं था, उन्हें वह बाज़ार में नहीं मिला। तब मेरे दिमाग में मौसमी सब्जियों को परिरक्षित रखने का विचार आया। सब्जियों की उच्च पोषणीय महत्ता के कारण इसके महत्व को दैनिक आहार से पृथक नहीं रखा जा सकता क्योंकि यह प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट्स, फाइबर, मिनरल, नमक आदि प्रदान करते हैं"। श्री. जोशी निजी कंपनी में कार्यरत थे; वहाँ न नौकरी की सुरक्षा थी न काम से संतुष्टि थी। अतः हमेशा से ही उनकी दिलचस्पी अपना व्यवसाय शुरू करने में थी। उनमें ऐसा करने का आत्मविश्वास नहीं था क्योंकि उनके पास व्यापार के मूल और तकनीकों के प्रशिक्षण का अभाव था। निर्जलीकरण और संरक्षण तकनीकों में विशेषज्ञता हासिल करने के लिए उन्होंने खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय द्वारा आयोजित खाद्य प्रसंस्करण प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। इस दौरान, उन्हें कृषि उद्यमिता विकास हेतु मैनेज के एसी और एबीसी प्रशिक्षण कार्यक्रम के विषय में पता चला। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम मीट्कोण कंसल्टेंसी सर्विसेस लिमिटेड द्वारा पुणे में आयोजित किया गया था। उन्होंने वर्ष 2008 में इस कार्यक्रम में पंजीकरण करवाया था। श्री. जोशी का कहना है कि, "इस प्रशिक्षण ने मुझे अपने ज्ञान को बढ़ाने में मदद की, मेरे दृष्टिकोण को आकार दिया, और वित्तीय विश्लेषणात्मक क्षमता प्रदान की। इसने मेरे व्यवसाय संबन्धित निर्णय लेने की क्षमता में भी सुधार लाया। मैं सब्जी प्रसंस्करण का व्यवसाय आरंभ करने का निर्णय ले सका। दो माह के प्रशिक्षण कार्यक्रम की समाप्ती तक मैं व्यवसाय शुरू करने के मेरे विचार को ले कर स्पष्ट था"। प्रशिक्षण के सफलतापूर्वक समाप्ती के पश्चात, उन्होंने अपनी रु.5 लाख की निधि के निवेश से 'अरुषा ऐग्रो फूड्स' के नाम से अपना फ़र्म पंजीकृत करवाया। एकीकृत निर्जलीकरण एकक स्थापित करने के लिए उन्होंने आधुनिक मशीनें खरीदी। इस फ़र्म ने उच्च गुणवत्ता के बीज और अन्य इनपुट्स देते हुये सब्जी उत्पादन में परामर्श देना प्रारम्भ किया। आरंभ में किसानों ने बदलने के लिए मना कर दिया, परंतु आकर्षक बाई-बैक समझौते के कारण, चार गाँव के 40 कृषक फ़र्म के साथ जुड़ गए। परिपक्वता, सुगंध और स्वाद के चरम पर काटी गयी सब्जियों को जल्द प्रसंस्करण इकाई पहुंचाया जाता था। श्री जोशी का कहना है कि, 'फ़र्म सब्जियों की हाथ से कटाई का सुझाव देता है जो उत्पादकों को स्वच्छ और उच्च गुणवत्ता के उत्पादों की आपूर्ति में मदद करता है। तकनीकी रूप से किसी भी सब्जी का निर्जलीकरण किया जा सकता है और उसका पाउडर बनाया जा सकता है। हालाँकि, बाज़ार की मांग को देखते हुये, यह फ़र्म पालक, कोथमीर, गाजर, मेथी, कड़ीपत्ता, बीट, दूधि के पाउडर बनाने में लगे हुये है"।

श्री. ऋषिकेश एस. जोशी,

श्री. राजाराम किसानराव पुंड, पुंड वस्ती, कोलबेट, सिंगावे तालुका, अहमद नगर के निवासी है। वें अपने खेत की सीमा पर तुलसी (ओसिमम टेनुइफ़्लोरूम) उगाते है और गाँव के मंदिर में बेचते है। श्री. जोशी ने श्री. पुंड से संपर्क किया और एक एकड़ की ज़मीन के लिए कृष्ण (पर्पल) तुलसी के बीज देकर बाइ-बैक अनुबंध तय किया। पौधा लगाने के 90 दिनों बाद, श्री. पुंड ने फसल काटी और उन्हें अच्छा दाम प्राप्त हुआ। अब वें वैज्ञानिक तरीके से तुलसी का उत्पादन कर रहे है और अच्छा लाभ कमा रहे है। उनका कहना है कि, 'मैंने कभी नहीं सोचा था की तुलसी आय का अच्छा स्रोत बन सकती है। नियमित आय ने मेरी आर्थिक स्थिति को बढ़ाने में मदद की है'।

इस फ़र्म का वार्षिक कारोबार रु. 12 लाख है। इस फ़र्म ने 3 कौशल कर्मचारियों को प्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्रदान किया है और लगभग 20 ग्रामीण युवा ग्राम स्तर पर कटाई और परिवहन के कार्य में लगे हुए हैं। श्री जोशी अपने व्यवसाय को विदेशी फसलों तक बढ़ाना चाहते है और सब्जी के पाउडर का निर्यात करना चाहते है। अंततः श्री जोशी इस बात पर बल देते है कि, "खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र उद्योग एवं कृषि के बीच महत्वपूर्ण संबंध स्थापित करता है। खाद्य प्रसंस्करण के विकास से भारतीय अर्थव्यवस्था को भारी लाभ पहुंचाएगा, कृषि की पैदावार बढ़ेगी, उत्पादकता बढ़ेगी, रोजगार बनेंगे और ग्रामीण लोगों का जीवन स्तर भी ऊपर उठेगा। मैं साथी कृषि उद्यमियों से अपील करता हूँ की, वें कृषि उत्पादकों को शामिल करते हुये इस आशाजनक उद्योग में प्रवेश ले"।

श्री. ऋषिकेश एस. जोशी, आरुषा ऐग्रो फूड्स

एच.636/2, अनिल तानपुरे कॉलोनी, एटी/पोस्ट/तालुका राहुरी, अहमदनगर जिला (एम.एस.) 413705,

ईमेल hsjoshi19@gmail.com, मोबाइल: +91 9420 4949 20

लीडरों का निर्माण – एसी और एबीसी योजना द्वारा विश्व का नेतृत्व करना

केवल महिला उद्यमियों के लिए एसी और एबीसी प्रशिक्षण कार्यक्रम

इंटरनेशनल स्कूल फॉर पब्लिक लीडरशिप (आईएसपीएल), अहमदाबाद, एक गैर-लाभकारी स्वैच्छिक संगठन है जिसे पुरी संस्थान के प्रो.नाथु पुरी द्वारा प्रोत्साहन प्राप्त हुआ है। यह वर्तमान के नेताओं और भविष्य की पीढ़ी की क्षमता निर्माण के कार्य में शामिल है। यह संस्थान भविष्य की पीढ़ी को सार्वजनिक नेतृत्व, उद्यमशीलता और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अवसरों को ग्रहण करने तथा सीखने और नेतृत्व में उत्कृष्टता लाने के लिए तैयार कर रहा है। वर्ष 2008 में, आईएसपीएल ने मैनेज के साथ गुजरात राज्य के लिए नोडल प्रशिक्षण संस्थान (एनआईटी) के रूप में गठ-जोड़ किया। कुल 19 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए और 526 अभयार्थियों को प्रशिक्षित किया गया, जिसमे से 243 ने ऐग्री-क्लीनिक, ऐग्री-व्यवसाय केंद्र, कुक्कुड पालन, पशु चिकित्सालय, कृषि मशीनरी इकाई, सूक्ष्म पोषक-तत्वों एवं जैविक-उर्वरकों की उत्पादकता, कृषि परामर्श, खाद्य प्रसंस्करण, डेरी, बीज प्रसंस्करण एवं ग्रेडिंग, आदि के क्षेत्र में सफलतापूर्वक ऐग्री-वैंचर स्थापित किए हैं। उद्यमवृत्ति में महिलाओं को प्रोत्साहित करने के लिए, एसी और एबीसी का 18 वां प्रशिक्षण कार्यक्रम अनन्य रूप से महिलाओं के लिए आयोजित किया गया था।

एसी एवं एबीसी योजना के प्रोन्नयन के लिए उत्तम पद्धतियाँ

- एसी और एबीसी योजना के कार्यान्वयन को सुदृढ़ बनाने के लिए बैंकरों, नाबार्ड और अन्य स्टेकहोल्डरों के साथ प्रशिक्षुओं के लिए अंतरफलक कार्यशालाएं आयोजित करना, बैंकों के पास लंबित प्रस्तावों का पुनरीक्षण करना और ऋण के लिए परियोजना प्रस्तावों को प्रस्तुत करने की प्रक्रिया का पुनर्मूल्यांकन करना।
- कृषि व्यवसाय केंद्र प्रारम्भ करने के लिए बीजिनेस लाइसेन्स प्राप्त करने तथा नए व्यापार प्रारम्भ करने हेतु प्रक्रियात्मक औपचारिकताओं को पूरा करने में कृषिउद्यमियों को नियमित रूप से समर्थन देना।
- नाबार्ड से सब्सिडी प्राप्त करने के लिए उद्यमियों से प्राप्त विस्तारण सेवाओं प्रलेखन रखने के लिए कृषि उद्यमियों को सलाह देना।
- प्रतिष्ठित कृषि उद्यमियों में कृषि-उद्यमवृत्ति कौशल को बढ़ाने के लिए पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना।
- ई-साहित्य, एसी और एबीसी निर्देश, कृषि उद्यमियों की सफल कहानियाँ और अध्ययन सामाग्री आदि का प्रावधान।
- विषय-वार कृषि उद्यमियों के संघों के समूह के निर्माण में समर्थन देना।
- कृषि उद्यमिता द्वारा विस्तारण सेवाएँ प्रदान करने के लिए एटीएमए, ब्लॉक प्रौद्योगिकी प्रबंधन, और राज्य कृषि विभाग के निदेशकों के साथ कृषि उद्यमियों का संपर्क बनाने के लिए सहायता प्रदान करना।
- कृषि उद्यमियों को सब्सिडी प्रदान करने हेतु नाबार्ड के क्षेत्रीय कार्यालय और नाबार्ड के जिला विकास अधिकारियों के साथ संपर्क स्थापित करना।

डॉ. डी. आर पटेल,
नोडल अधिकारी

एसी और एबीसी प्रशिक्षण कार्यक्रम की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ:

कुल 526 अभ्यर्थियों को प्रशिक्षित किया गया है और 243 अभ्यर्थियों ने विभिन्न गतिविधियों में ऐग्रीवैंचर स्थापित किए है। सफलता का दर 46% है। डॉ. डी. आर. पटेल (नोडल अधिकारी, एनटीआई) का कहना है कि, "एसी और एबीसी प्रशिक्षण में कृषि व्यवसायी आत्मविश्वास, जागरूकता, नियोजन बनाते है और कृषि व्यवसाय में भविष्य की चुनौतियों का मुक़ाबला करने के लिए तैयार हो जाते है। व्यवसाय को युक्तिपूर्वक और होशियारी से चलाने के लिए कृषि उद्यमियों को प्रबंधकीय और वित्तीय सूझबूझ सिखायी जाती है। बदलती जलवायु की परिस्थिति में कृषकों को जलवायु स्मार्ट कृषि पर विस्तारण सेवाएँ प्रदान करने हेतु कृषि उद्यमियों के लिए विशेष पाठ्यक्रम तैयार किया गया है"।

इंटरनेशनल स्कूल फॉर पब्लिक लीडरशिप (आईएसपीएल)
पटेल ब्लॉक, राजदीप एलेक्टोर्निक्स कम्पाउण्ड, स्टेडियम, सर्कल, नवरंगपुरा, अहमदाबाद -380014, गुजरात, फोन /फ़ैक्स: 079 26421580, ईमेल: isplindia@gmail.com

राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, कर्नल में आयोजित XII वां कृषि विज्ञान काँग्रेस

एनडीआरआई, कर्नल में डॉ. पी. चन्द्रशेखर, निदेशक, मैनेज

12 वी कृषि विज्ञान काँग्रेस 3-6 फ़रवरी, 2015 को एनडीआरआई कर्नल में आयोजित की गयी थी जिसमे 'लघुधारक किसानों की सतत आजीविका सुरक्षा' मुख्यतः भारत के सभी किसानों के समक्ष आ रही समस्याओं और चुनौतियों पर विचार-विमर्श करने के विषय पर ध्यान केन्द्रित किया गया था। इस विचार-विमर्श में प्रोद्योगिकीय नवाचारों, नीतिगत सुधारों और बाज़ार के मुद्दों को रेखांकित किया गया जो लघु कृषकों को प्रत्यक्ष रूप से आर्थिक सुविधाएं प्रदान कर सके। डॉ पी.चन्द्रशेखर, निदेशक (कृषि विस्तारण) मैनेज, हैदराबाद ने एक अतिथि वक्ता के रूप में 'ऐग्री-क्लीनिक और ऐग्री-बिज़नस केंद्र-कृषि के व्यवसायीकरण और उद्यमशीलता में नए आयाम' पर विवेचन किया। यह सत्र, डॉ. एम.महादेवप्पा, पूर्व अध्यक्ष, एएसआरबी, डॉ. अरविंद, डीडीजी (शिक्षा), आईसीएआर, डॉ. आर.एस.अंतिल, निदेशक विस्तारण, सीसीएस एचएयू हिसार और डॉ. हिमांशु पाठक, आईएआरआई, नई दिल्ली, की अध्यक्षता में आयोजित किया गया तथा डॉ. एस.के तोमर द्वारा संचालित किया गया। कृषि विज्ञान काँग्रेस ने भारतीय कृषि में समसामयिक विषयों जैसे फसल और फल उत्पादन, पशु उत्पादन प्रणाली (दोनों छोटे और बड़े पशु और कुक्कड), मत्स्यपालन प्रौद्योगिकी और संबन्धित सामाजिक विज्ञान मुद्दों पर विचार-विमर्श करने और विचारों के आदान प्रदान के लिए जोशपूर्ण मंच प्रदान किया। वैज्ञानिक विचार-विमर्शों के अलावा, काँग्रेस ने कृषि उद्यमियों, बीज, उर्वरक, ऐग्रोकेमिकल्स, औषध, कृषि, प्रयोगशाला और डेरी उपकरणों के उत्पादकों, इन्शुरेंस कंपनियों और कृषि ऋण प्रदाताओं को उनके उत्पादों के प्रदर्शन और प्रत्याशित ग्राहकों के समूह से मिलने का अवसर प्रदान किया।

www.agriclinics.net वह पोर्टल है जो एसी तथा एबीसी योजना के बारे में सूचना प्रदान करता है। यह पोर्टल पात्रता मानदंडों, प्रशिक्षण संस्थानों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, सहायता कार्यों, वित्त विकल्पों तथा भावी उद्यमियों को सब्सिडी प्रदान करने के संबंध में अद्यतन जानकारी देता है।यह वेबसाइट स्थापित कृषि नव उद्यमों, लंबित परियोजनाओं, संबंधित योजनाओं के ब्यौरों से संबंधित सूचना तथा राज्य सरकारों, कृषि विश्वविद्यालयों, बैंकों, प्रशिक्षण संस्थानों तथा कृषि उद्यमियों के लिए उपयोगी अन्य सूचना भी प्रदान करती है।

एग्री क्लीनिकों तथा एग्रीबिजनेस केंद्रों के संबंध में अधिक स्पष्टीकरण के लिए कृपया इस पते पर मेल करें। indianagripreneur@manage.gov.in

"प्रत्येक कृषक द्वारा बेहतर कृषि"

"कृषिउद्यमी" श्री के सत्यगोपाल, आईएएस, महानिदेशक (मैनेज)
द्वारा प्रकाशित

हमसे संपर्क करें:
कृषि उद्यमिता विकास केंद्र, (सीएडी)
कृषि विस्तार प्रबंधन के राष्ट्रिय संस्थान (मैनेज)
(मैनेज), राजेंद्रनगर, हैदराबाद, पिन-500 030, भारत
ई-मेल: indianagripreneur@manage.gov.in
वेबसाइट: www.agriclinics.net
कृषि उद्यमी का टोल फ्री हेल्पलाइन नं: 1800 425 1556
ई मेल: helplinecad@manage.gov.in

प्रमुख संपादक :डॉ.के.सत्यगोपाल, आईएएस
संपादक :डॉ. पी चन्द्रशेखर
सहयाक संपादक : : डॉ. लक्ष्मीमूर्ति
:सुश्री ज्योति सहारे
हिन्दी अनुवाद :डॉ. के. श्रीवल्ली